मंगलीक दोष

कारण एवं निवारण

डॉ. भोजराज द्विवेदी

मंगल ग्रह का नाम "लोहितांग" है, क्योंकि दूर से देखने वाले को लाल दिखता है। मंगल का नाम 'कुज' और 'भौम' भी है-भूमि पुत्र होने से 'कुज' और पृथ्वी से पृथक हो जाने के कारण 'भौम' नाम हुआ। चूंकि कुछ संघर्ष के अनंतर पृथ्वी से पृथकत्व हुआ था, अतः मंगल लड़ाई-झगड़े का 'कारक ग्रह' माना गया है। मंगल को पृथ्वी का पुत्र कहा गया है। ग्रहों के कुटुम्ब में रवि पृथ्वी के पिता के स्थान में है और चंद्र माता के स्थान में है। इसलिए मंगल में रवि और चंद्र दोनों के गुणों का कुछ-कुछ मिश्रण पाया जाता है।

अनुक्रमणिका

उपचार खंड

पुस्तक के बारे में

मंगलीक दोष कारण एवं निवारण पर बहुत कम साहित्य ज्योतिष जगत् में लिखा गया है। जबकि मंगलीक दोष का हौवा छोटे-छोटे ग्रामीण अंचल में तथा बड़े शहरों में भी देखने को मिलता है। विदेशों से भी अक्सर हिन्दू और गैर हिन्दू लोग भी हमसे आकर मंगलीक दोष निवारण के टोटके पूछते हैं। परिपक्व अवस्था में जब लड़के-लड़कियों की शादी नहीं होती तब यह चिन्ता और अधिक बढ़ जाती है। यह सच है कि सुखी विवाह का सुख सौभाग्यशाली को ही प्राप्त होता है।

हजरत ईसा मसीह की कुण्डली में मंगल आठवें था, इसलिए वे अविवाहित रहे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी की कुण्डली के लग्न में शनि मंगल छठे होने से वे भी आजीवन कुंवारे रहे। सुश्री मायावती अविवाहित रहीं क्योंकि सप्तमस्थान में सूर्य सप्तमेश में शनि पापपीड़ित है। शनि+मंगल की युति पंचम भाव में होने से सम्भवत: उन्हें अपना वारिस भी नहीं मिलेगा। श्रीमती इन्दिरा गांधी के लग्न में शनि, राहु के छठे में होने से वैधव्ययोग बना। श्रीमती सोनिया गांधी के लग्न में शनि, मंगल के छठे में होने से वैधव्ययोग बना। श्रीमती मेनका गांधी की कुण्डली में मंगल आठवें, सप्तमेश शनि पापपीड़ित होने से वैधव्ययोग बना। राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती.वसुन्धरा राजे की कुण्डली में चौथे स्थान में शनि एवं प्रथम में राहु होने से दाम्पत्य जीवन विवादास्पद है। हमारे राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम की कुण्डली में भी चौथे स्थान में मंगल, सप्तमेश शनि छठे होने से उन्हें भी पत्नी का सुख नहीं है। ये सब ऐतिहासिक कुण्डलियां हैं, जिनका सार्वजनिक प्रकाशन उपलब्ध है। इन्हें ऐतिहासिक तथ्यों की पृष्ठभूमि एवं प्राचीन ग्रह स्थितियों के कारण झुठलाया नहीं जा सकता है। न ही इसे अन्धविश्वास की श्रेणी में खड़ा किया जा सकता। इस सच्चाई को हर हालत में स्वीकार किया जाना चाहिए कि कोई व्यक्ति कितना ही बड़ा क्यों न हो? चाहे साक्षात् ईश्वर भी क्यों न हो? ग्रहों के प्रकोप में, विधाता के विधान से बच नहीं सकता?

पर इसके साथ ही उपायों की सार्थकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। उपाय करने पर शूल की पीड़ा सूई में बदल जाती है। कई बार पीड़ा गायब भी हो जाती है। ऐसे अनेक जीवन्त दृष्टान्त हमारे पास है। जिस पर अलग से पुस्तक

लिखी जा सकती है। जिस प्रकार बीमार होने पर हम डॉक्टर के पास जाते हैं तथा बीमारी ठीक हो जाती है, हम स्वस्थ हो जाते हैं। यद्यपि मौत से डॉक्टर नहीं बचा सकता। समय आने पर रोगी भी मरता है, डॉक्टर भी मरता है पर हम लोग चिकित्सा विज्ञान के शरण में ठीक होने के लिए जाते हैं। ठीक यही स्थिति ज्योतिष शास्त्र की है। शास्त्र ज्ञाता विद्वान् ज्योतिषी मनुष्य को भाग्य जनित विविध संकटों में निकालने में पूर्ण रूप में सक्षम व समर्थ होता है। तंत्र-मंत्र अपनी जगह निश्चित रूप से काम करते हैं पर अन्तिम निर्णय सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिसम्पन्न विधाता के हाथ में है।

अविवाह योग, विलम्ब विवाहयोग, बहुविवाह योग, वैधव्य योग का परिहार, घटविवाह के रूप में शास्त्रों में वर्णित है परन्तु घटविवाह पर कोई स्वतंत्र पुस्तक अभी तक देखने में नहीं आई। इसलिए इस विषय पर मेरी लेखनी चल पड़ी। मेरा विश्वास है कि 21वीं सहस्त्राब्दी धार्मिक जन चेतना की सहस्त्राब्दी है। ऐसे में यह पुस्तक दीपशिखा का कार्य करेगी। विश्व-ज्योतिष दिवस पर यह पुस्तक ज्योतिष जिज्ञासुओं, मंत्र-तंत्र जिज्ञासुओं के लिए, श्रीमाली ब्राह्मणों एवं कर्मकाण्डी विद्वानों के लिए प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। मंगल पर विस्तृत फलादेश 'भोजसंहिता' के 'मंगलखंड' में मिलेगा। इस पुस्तक में मंगल संबंधी सभी दोषों का निवारण घटविवाह के माध्यम से बताया गया है। घटविवाह में प्रायश्चित हवन, लाजाहोम, राष्ट्रमृतहोम अनिवार्य है। घट विवाह की सम्पूर्ण शास्त्र सम्मत विधि कहीं उपलब्ध नहीं है। अनेक जिज्ञासु सज्जनों एवं विद्वानों के पत्र आते रहते हैं। प्रबुद्ध पाठकों की त्वरित मांग को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। गृह-स्थापना के मंत्र तो यत्र-तत्र-सर्वत्र मिलते हैं पर प्रत्येक का ग्रह का विनियोग, ध्यान, आवाहन मंत्र, प्राण प्रतिष्ठा मंत्र, दिशा, तान्त्रिक मंत्र, नमस्कार मंत्र आपको केवल इस पुस्तक में ही मिलेंगे। इसी प्रकार से मातृका स्थापन पर वैदिक एवं पौराणिक दोनों मंत्र दिए गए हैं। विवाह विधि पूर्ण है। इस पुस्तक को हाथ में लेने के बाद इस कार्य हेतु दूसरी पुस्तक की सहायता नहीं रह पाएगी। यही इस पुस्तक का प्रयोजन है।

भोजराज द्विवेदी

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)
130 ए रोड, अज्ञातदर्शन कॉम्पलेक्स, मरुदीप अपार्टमेंट,
सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
दूरभाष-2637359, फैक्स-2431883, मोबाइल-9314713513
अति विशिष्ट कार्य हेतु-9314729105

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 400 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "**कर्कलग्न**" के अंतर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि **'युग पुरुष'** के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. **हस्तरेखा विभाग**—सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनियां में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय के छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया।

2. **ज्योतिष विभाग**—इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाहपत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां हैण्ड-प्रिण्ट देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। 'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज' के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये नि:शुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। फलित ज्योतिष पर एक साफ्टवेयर **'सृष्टि'** के नाम से बन रहा है, जो अब तक का सबसे अनुपम व अद्वितीय कार्य होगा।

3. **वास्तु विभाग**—हमने **'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन'** की स्थापना कर रखी है।

हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु शास्त्र पर विद्वान लेखक की अनेक पुस्तकें हिन्दी व अंग्रेजी में प्रकाशित है। जो अपने आप में एक रिकॉर्ड उपलब्ध है।

4. यंत्र विभाग—विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी. पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग—अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान—संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। भारत एवं विदेशों में 'सामुहिक कालसर्पयोग शान्ति' कराने का श्रेय हमारे इस संस्थान को ही जाता है।

7. प्रकाशन विभाग—जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 500 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 400 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. **अज्ञातदर्शन (पाक्षिक)** 1977 से प्रकाशित, 2. **चण्डमार्तण्डपंचांग** एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

8. श्रीविद्या साधक परिवार—प्रायः सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है।

विनम्र निवेदन—बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2637359, 3113513, फैक्स 2431883, मोबाइल-0291-3129105 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

—आचार्य सोमतीर्थ

जिज्ञासा खंड

मंगल की उत्पत्ति कथा

वाराहकल्प की बात है। भगवान वाराह ने रसातल से पृथ्वी का उद्धार कर उसको अपनी कक्षा में स्थापित कर दिया था। इस कारण पृथ्वी देवी की उद्विग्नता मिट गई और वे स्वस्थ हो गई। उनकी इच्छा भगवान को पति के रूप में पाने की हो गई। उस समय वाराह भगवान का तेज करोड़ों सूर्य के सदृश्य असह्य था। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी की कामना की पूर्ति के लिए भगवान वाराह अपने मनोरम रूप में आ गए और पृथ्वी देवी के साथ वे दिव्य वर्ष तक एकान्त में रहे। इसके बाद वाराह-रूप में आकर पृथ्वी देवी का पूजन किया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/29-33)। उस समय पृथ्वी देवी गर्भवती हो चुकी थीं, उन्होंने मंगल नामक ग्रह को जन्म दिया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/43)। विभिन्न कल्पों में मंगल ग्रह की उत्पत्ति की विभिन्न कथाएं हैं। आजकल पूजा के प्रयोग में इन्हें भारद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेश पुराण में आती है।

पृथ्वी के पिता सूर्य और उसकी माता चन्द्र है। मंगल पृथ्वी का पुत्र है। सूर्य और चन्द्र इसके नाना-नानी है। ननिहाल के पूर्ण गुण भी इसमें हैं और पृथ्वी से संघर्ष कर यह उससे अलग हुआ है। अत: इसमें मारकतत्व भी है। सूर्य का तेजस्व और चन्द्र की शीतलता इसमें है। यह प्रबल साहसी है। शक्ति का नेतृत्व इसका प्रतीक है। उज्जैन में इसकी उत्पत्ति मानी गई है। यह चतुर्भुज रूप है। शूल, गदा आदि इसके शस्त्र हैं। यह भारद्वाज कुलीन क्षत्रिय है। मेष इसका वाहन है। इसका देवता कार्तिक स्वामी है। अग्नि तत्त्व होने के कारण वर्षा में चमकती बिजली के समान इसकी कांति है।

'अहमवैवर्त पुराण, अध्याय' 9 के अनुसार-

> **''उपेन्द्ररूप मालोक्य कामार्त्ता च वसुन्धरा।**
> **विधाय सुन्दरी वेशमक्षता प्रौढ़ यौवना॥**

एक बार भगवान् विष्णु का अद्भुत सौन्दर्य देखकर पृथ्वी ने सुन्दर स्त्री का वेष धारण करके तेजस्वी पुत्र की कामना हेतु प्रणय निवेदन किया। दोनों के संगम

में स्त्रीरूपा पृथ्वी मूर्च्छित हो गई। विष्णु द्वारा उत्सर्जित रक्तवर्णीय वीर्य ही प्रवाल है। पृथ्वी द्वारा उत्पन्न उसका यह पुत्र रक्तवर्णीय होने से 'अंगारक' कहलाया।

'मत्स्य पुराण अंगारक व्रत' नामक 68वें अध्याय में एक अन्य कथा के अनुसार प्रजापति दक्ष का विनाश करने के लिए कुपित हुए महादेव के ललाट से लालरंग के पसीने की एक बूंद पृथ्वी पर गिरी। पृथ्वी उस तेज को सहन न कर सकी। वह बूंद सात पाताल, सात समुद्रों का भेदन करके 'वीरभद्र' के रूप में परिवर्तित हो गई। दक्ष यज्ञ का विनाश करके वीरभद्र पुनः शिव के सम्मुख उपस्थित हुआ। शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे 'ग्रह' का रूप प्रदान किया। और कहा-

अङ्गारक इति ख्याति गयिष्यसि धरात्मज!
देवलोर्के द्वितीयश्च तव रूपं भविष्यति।
ये च त्वां पूजभिष्यन्ति चतुर्थ्यां त्वह्निने नराः।
रूपमारोग्यं ऐश्वर्य तेष्वनन्तं भविष्यति।

आज से तुम धरात्मज एवं अंगारक नाम से प्रसिद्ध होकर देवलोक में ग्रह के रूप में प्रसिद्ध हो जाओगे। जो व्यक्ति चतुर्थी एवं मंगलवार के दिन तुम्हारी पूजा करेगा उसे तुम उत्तम आयु, आरोग्य, अनन्त ऐश्वर्य देकर तृप्त करोगे।

स्कन्द पुराण में वर्णित 'मंगल स्तोत्र' का नित्य पाठ करने से मंगल शीघ्र प्रसन्न होकर मनोवांछित फल देते हैं। **'कोष्ठीप्रदीप'** नामक प्राचीन ग्रन्थ में कहा गया है-

उग्रः प्रतापो क्षितिपाल मंत्री
रणप्रियो वक्रवचाः सरोषः।
सत्वान्वितः शूरगण प्रणेता
कुजस्यवारे प्रभवो मनुष्यः॥

जो मंगलवार के दिन (लग्न में मंगल लेकर) पैदा होगा, वह महान् प्रतापी, उग्र, रणप्रिय, क्रोधी, सात्विक, शूरवीर एवं राज्यमंत्री होगा।

मंगल का कारकतत्व-मंगल भूमि, पराक्रम, विजय, कीर्ति, युद्ध, साहस का कारक ग्रह है। छोटे-बड़े भाई-बहन, जीवनशक्ति, लाल-नारंगी रंग, संघर्ष, आत्मबल, रक्त, रक्तविकार, चर्म रोग, तांबा, कामवासना, धैर्य, क्रोध, उत्तेजना, ठेकेदारी, निर्माण कार्य, भूमि का क्रय-विक्रय, ऋण यह सब मंगल में देखा जाता है।

मंगल का मुख्य स्वरूप

मंगल के पर्यायवाची नाम-मंगल-आर-वक्त-क्रूर-आविनेय- कुज- भौम-लोहितांग-पापी-क्षितिज-अंगारक-क्रूरनेत्र-क्रूराक्ष-क्षितिनंदन-धरापुत्र-कुसुत-

कुपुत्र-माहेय-गोत्रापुत्र-भूपुत्र-क्ष्मापुत्र-भूमिसूनु-मेदिनीज-भूसुत- अवनिसुत-नंदन-महीज-क्षोणिपुत्र-आषाढाभ-आषाढाभ-रक्तांग-आंगिरस-रेत-कोण-स्कंद-कार्तिकेय-षडानन-सुब्रह्मण्यं।

अङ्गारकः भौमः कुजः वक्रः महीसुतः वर्षार्च्चि
लोहिताङ्ग, खोन्मुखः ऋणान्तकः इतिशब्दरत्नावली।
आर, क्रूरवृक्, आवनेय इति ज्योतिषतत्त्वम्।

मंगल ग्रह का नाम ''लौहितांग,'' है, क्योंकि दूर से देखने वाले को लाल दिखता है। मंगल का नाम 'कुज' और 'भौम' भी है-भूमि पुत्र होने से 'कुज' और पृथ्वी से पृथक हो जाने के कारण 'भौम' नाम हुआ। चूंकि कुछ संघर्ष के अनन्तर पृथ्वी से पृथकत्व हुआ था, अतः मंगल लड़ाई झगड़े का 'कारकग्रह' माना गया है। मंगल को पृथ्वी का पुत्र कहा गया है। ग्रहों के कुटुम्ब में रवि पृथ्वी के पिता के स्थान में है और चन्द्र माता के स्थान में है। इसलिए मंगल में रवि और चन्द्र दोनों के गुणों का कुछ-कुछ मिश्रण पाया जाता है।

पुराणों में देवताओं का सेनापति शिव पुत्र कार्तिकेय माने जाते हैं क्योंकि इन्होंने तारकासुर का वध किया था-मंगल भी सेनापति है अतः इनके शिवपुत्र स्कन्द है-गुह, कार्तिकेय, स्कन्द और षडानन इनके देवता हैं जो मंगल के भी हैं।

मंगल का रथ

अष्टाश्वः कांचनः श्रीमान्भौमस्यापि रथो महान्।
पद्मरागारूणैरश्वैः संयुक्तो वह्निसम्भवैः॥

मंगल का अति शोभायमान सुवर्ण-निर्मित महान् रथ भी अग्नि से उत्पन्न हुए। पद्मराग-मणि के समान, अरुणवर्ण, आठ घोड़ों से युक्त है।

(श्रीविष्णुपुराण अ.12/श्लोक 18)

मंगल का वाहन-मंगल देवता का रथ सुवर्ण-निर्मित है। लाल रंग वाले घोड़े इस रथ में जुते रहते हैं। रथ पर अग्नि से उत्पन्न ध्वज लहराते हैं। इस रथ पर बैठकर मंगल देवता कभी सीधी, कभी वक्र गति से विचरण करते हैं। **(मत्स्य पु. 127/4-5)**

कहीं-कहीं इनका वाहन मेष (भेड़ा) बताया गया है **(श्रीतत्त्वनिधि)**।

मंगल देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए-

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरद स्याद् धरासुतः॥

(मत्स्य पु. 94/3)

मंगल के देवता-मंगल के अधिदेवता स्कन्ध, प्रत्याधिदेवता पृथ्वी हैं। इसकी आकृति चतुष्कोणात्मक है। मंगल का गोत्र भारद्वाज है।

मंगल पूजन—मंगल ग्रह के पूजन की बड़ी महिमा है। भौमव्रत में ताम्रपत्र पर भौम-यंत्र लिखकर मंगल की सुवर्णमय प्रतिमा प्रतिष्ठित कर पूजा करने का विधान है (भविष्य पुराण)। जिस मंगलवार को स्वाति नक्षत्र मिले, उसमें भौमवार-व्रत करने का विधान है। मंगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। (पद्‌म पुराण)। अंगारक-व्रत की विधि मत्स्य पुराण के बहत्तरवें अध्याय में लिखी गई है। मंगल अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्र गति से चले तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को पार करते हैं **(श्रीमद्‌भा. 5/22/14)**।

चतुर्भुज—मंगल के चार हाथ है। एक में शक्ति, दूसरे में वरद मुद्रा है। एक हाथ में गदा और चौथे हाथ में समय मुद्रा है। इसका कद नाटा है। यह युवा है, क्रूर है, वनचारी है। मंगल सुवर्णकारों का स्वामी है तथा कटुरस प्रिय है। मंगल ने लाल वस्त्र और रक्त पुष्प की लाल मालाएं धारण कर रखी है। मंगल के शरीर के रोम भी लाल हैं।

वर्ण—मंगल ग्रह का वर्ण लाल होता है और इनके रोम भी लाल हैं। (मत्स्य पु. 94/3)। मंगल शत्रुओं का विजेता, युद्ध प्रिय, ऋणकर्ता, ऋणहर्ता दोनों के रूप में प्रसिद्ध है। यह रक्त का प्रतीक होने से लाल रंग का है। वैद्यनाथ ने इसे "सरंक्त: गौर: कुज:" से लाल और सफेद के मिश्रण का रंग बताया है। वराह मिहिर ने इसे किंशुक के फूलों जैसा लाल बताया है। तपे हुए तांबे के समान इसकी कांति दर्शायी है। विदेशी विद्वानों ने इसे अग्नि ज्वाला सम वर्ण बताया है।

बलवत्ता—मंगल मध्याह्‌न काल में बली रहता है। यह मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। मेष इसकी मूल त्रिकोण राशि है। मकर में यह उच्च का होता और कर्क में नीच का बनता है। नवांश व द्रेष्काण में स्वगृही होकर बली होता है। मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर, मेष राशि के प्रारम्भ में बली होता है। मीन और कर्क में सुखप्रद होता है। **रुचकयोग**-केन्द्र में स्वगृही व उच्च राशि में स्थित मंगल में 'रुचकयोग' बनता है जो पंच महापुरुष योगों में से उत्तम योग है। ऐसा व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी, साहसी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। नैसर्गिक कुण्डली में लग्नेश और अष्टमेश बनकर जन्म व मृत्यु पर यह अधिकार रखता है। यह रात्रिबली, कृष्ण पक्ष में बली व दक्षिण दिशा में बली होता है। अपनी होरा अपने माह, पर्व और काल में बली होता है। ग्रीष्म ऋतु तथा चतुर्थ स्थान में इसका बल कमजोर रहता है। दशम स्थान में यह दिग्‌बली होता है। षष्ठ में हर्षबली होता है। यह तीसरे व षष्ठ भाव का कारक है, वहां भाव का नाश करता है। वह पुरुष ग्रह है, अत: स्त्री राशियों में ज्यादा सुखदायी रहता है। वक्री होने पर शुभ फल प्रदान करता है।

कार्य और धंधे—मंगल में शारीरिक कार्य का सामर्थ्य होता है। इसका प्रधान गुण है दूसरों के लिए खुद को भी कष्ट में डालना। थोड़े से इशारे से ये बात को

फौरन समझ जाता है। तर्क की प्रबल शक्ति का विकास इनमें होता है-इसलिए राजनेता, वकील, बिजली के कार्य, वैज्ञानिक, मिस्त्री, व्यापारी, मशीनरी के कार्य, इंजीनियर, भूस्वामी, जागीरदार, सुनार, दर्जी, लुहार, चमार, रसोईया, औषधि विक्रेता, चोर, डकैत, स्मगलर, नायक, सेनापति, सिपाही आदि के धंधों में मंगल की प्रधानता पाई जाती है।

धातु—सोना व तांबा है। रत्न मूंगा (प्रवाल) है। 5 से 9 रत्ती तक का मूंगा पहनने से यह फलता है।

दृष्टि—इसकी उर्ध्व दृष्टि है। 4, 7, 8वीं सम्पूर्ण दृष्टियां हैं, 3, 10 एकपाद, 5, 9 द्विपाद दृष्टियां हैं।

यह दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि का प्रभाव रखता है। केवल अपने घर को देखकर बुरा प्रभाव नहीं करता है, पर इसकी सप्तम दृष्टि प्रायः शत्रुता रखती है।

मित्रादि—मंगल के मित्र ग्रहों में सूर्य, बृहस्पति, चन्द्र हैं। बुध और राहु शत्रु है। शुक्र, शनि सम होते हैं। राहु की शत्रुता समता भाव पर निर्धारित है।

स्वरूप—जिन व्यक्तियों की मेष या वृश्चिक राशि होती है; या जिनके लग्न उपरोक्त होते हैं। वे प्रायः बिना सोचे समझे सामने वाले व्यक्ति से टकरा जाते हैं। वे बहुत उतावले व त्वरित परिणाम चाहने वाले होते हैं। ये लोग तेजस्वी व दबंग होते हैं तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। अपनी प्रतिभा से ऊंचे उठते हैं। क्रोधी व साहसी होते हैं।

उनका चेहरा ललाई लिए हुए कुछ गोरे रंग का या गेहुंआ होगा। मध्यम औसत कद, गर्दन लम्बी, बाल कुछ घुंघराले, नेत्रों में तीखापन, चेहरा कुछ लम्बा, आंखें गोल, दांत सुंदर, जातक के चेहरे के किसी भाग में चोट या मस्सा या लहसुन का निशान होगा, घुटने कमजोर होंगे। ललाट चौड़ा व बालों में हल्का घुंघरालापन रहेगा। इनका व्यक्तित्त्व प्रभावशाली एवं व्यक्ति स्वतंत्र विचार वाला होगा।

मंगल का वैदिक स्वरूप

चारों वेदों में मंगल या भौम से संबंधित कोई सूक्त नहीं मिलता। 'पृथ्वीसूक्त' एवं पृथ्वी के बारे में रहस्यमय जानकारियों से परिपूर्ण अनेक मंत्र ऋग्वेद में है परंतु इनके साथ मंगल ग्रह का कोई तारतम्य नहीं बैठता। वेदों में मंगल ग्रह की आराधना-पूजा व प्रतिष्ठा हेतु एक मंत्र सर्वाधिक प्रचलित है।

मंगल का वैदिक मंत्र

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्यांऽअयम्।

अपाॐरेताॐसिजिन्वति॥
ॐ भौमाय नमः

-यजुर्वेद अ.3/मं. 12

जिसका शब्दिक अर्थ इस प्रकार है-'यह अग्नि द्युलोक के शिर के समान महान है और समस्त पृथ्वीलोक इस अग्नि के तेज से महान है। यही अग्नि जनों में सार (तेज) रूप से (दृष्टि उत्पादन निमित्त) विद्यमान है।''

सम्भवत: ऋषियों ने द्यौलोक (अन्तरिक्ष) में ऐसा ज्वलनशील पिण्ड देखा हो, जिसमें जल-जीव व सृष्टि की सम्भावना हो तथा पृथ्वी से जिसका गहरा सम्बन्ध हो और उसे मंगल या भूमिपुत्र 'भौम' कह दिया हो। इस मंत्र के शब्दार्थ में तो कही नहीं, परन्तु गूढ़ार्थ व समाधि भाषा में ऐसा भाव झलकता है। इस मंत्र के पीछे ॐ भौमाय नम: जोड़ दिया गया है। जिसका अर्थ है मंगल के ऐसे दिव्य रूप को नमस्कार है। कर्मकाण्ड (पूजा-पाठ) में अनादिकाल से मंगल के पूजन हेतु इसी मंत्र का प्रयोग होता है। मंगल के बारे में इससे अधिक जानकारी वेदों में नहीं है पर पौराणिक काल में मंगल का दिव्य रूप धीरे-धीरे स्पष्टत: मुखरित होता चला गया।

मंगल का खगोलीय स्वरूप

सौरमंडल में पृथ्वी के बाद मंगल ग्रह का चौथा स्थान है। मंगल सूर्य से 22,40,00,000 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इसका व्यास 6860 कि.मी. है। मंगल अपने परिभ्रमण मार्ग पर 689 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। मंगल की भ्रमण गति 45 दिन में 20 अंश या डेढ़ दिन में एक अंश है। इसका बृहस्पतित्व हमारी पृथ्वी के बृहस्पतित्व के दसवें भाग के बराबर है। जिस प्रकार हमारी पृथ्वी के इर्द-गिर्द चन्द्रमा घूमता है उसी प्रकार मंगल के चारों और दो चन्द्रमा घूमते हैं। मंगल जब पृथ्वी के निकटतम होता है तब पृथ्वी से उसकी दूरी 9.8 करोड़ कि.मी. की होती है। उस समय यह लालमणि के समान चमकता हुआ दिखलाई देता है तथा उसका अध्ययन भी सुगम रहता है।

मंगल ग्रह अस्त होने से 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 60 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 300 दिन बाद पुन: अस्त होता है। मंगल को अंगारक रुधिर, आग्नेय, त्रिनेत्र, भौम, भूमिसुत, कुज आदि नाम दिए गए हैं।

मंगल की गति-मंगल अपनी धुरी पर 24 घण्टा 37 मिनट और 22 सेकेण्ड में एक चक्कर पूरा करता है। यह 686 दिन 17 घण्टा 20 मिनट और 41 सेकण्ड

में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। इसका चाल 15 मील प्रति सेकेण्ड और 54,000 मील प्रति घण्टा है। स्थूल मत से मंगल की चाल 18 माह मानी गई है। फलतः यह 45 दिन में एक राशि और डेढ़ दिन में एक अंश को पार कर जाता है। यह एक नक्षत्र पर 20 दिन और एक पाद पर 5 दिन रहता है।

जब यह वक्री होता है तो उस राशि को 127 दिन में और उससे अगले राशि को 15 दिन में पूरी करता है। यह जिस राशि पर मार्गी होता है उस पर 45 दिन रहता है। जब यह सूर्य से 135 डिग्री अंश की दूरी पर जाता है तो वक्री हो जाता है। उस समय इसकी चाल 65 दिन में 12 डिग्री अंश तक की हो जाती है। यह सूर्य से 17 डिग्री अंश की दूरी पर अस्त हो जाता है अस्त होने पर 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री हो जाता है तथा वक्री के 60 दिन बाद यह मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 46/11 होती है तो यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है।

मंगलीक दोष कारण और निवारण

जब भी जीवन साथी के चुनाव हेतु ग्रहमेलापक, कुण्डली मिलान, गुण मिलान की चर्चा होगी; तब मंगल दोष, पर कोई व्यवस्थित, पारिभाषिक अनुक्रमणिका अथवा कोई पुस्तक हमें नहीं मिलती। अनेक प्रकीर्ण श्लोकों एवं जनश्रुतियों के माध्यम से मंगलीक दोष का हौवा इतना फैल गया है कि मंगल के मिलान पर महत्वपूर्ण निर्णय अटक कर रह जाते हैं।

जिस श्लोक के आधार पर जहां कोई कुण्डली मंगलीक बनती है वहीं उस श्लोक के परिहार (काट) के अनेक प्रमाण हैं। ज्योतिष और व्याकरण का सिद्धांत है कि पूर्ववर्ती कारिका से परवर्ती कारिका बलवान होती है। मांगलीक दोष के प्रसंग में पूर्ववती कारिका तो सबको याद है परन्तु परवर्ती कारिकाएं उपेक्षित हैं। ज्योतिषी वर्ग या तो उन्हें देखता ही नहीं? या फिर जानता नहीं? फलतः अमंगली जन्म कुण्डलियां भी मंगलीक घोषित कर दी जाती हैं। कई सज्जन मंगलीक लड़का मिलेगा या नहीं? इस भय से अपनी बच्ची की असली जन्म कुण्डली छिपा देते हैं। या फिर किसी परिचित ज्योतिषी से बिना मंगल वाली नई कुण्डली बनवा लेते हैं। पर ऐसा करने से ग्रहों का प्रभाव तो नहीं बदलेगा। अब समय आ गया है कि किसी प्रबुद्ध ज्योतिषी को ही आगे आकर मंगल के संबंध में फैली भ्रान्त धारणाओं को दूर करना होगा तथा मंगल दोष परिहार के सभी वचनों को संकलित कर उद्धृत करना होगा।

दाम्पत्य जीवन को सुखमय व समृद्धिमय बनाने की लोककामना, मंगलीक दोष से उत्पन्न, मरण, वैधव्य, संतानहीनता, कलह, रोग भय से संत्रस्त रहती है।

आज के युग में जबकि विज्ञान की समृद्धि हुई तब पराविज्ञान की पराकाष्ठा का ह्रास हो गया है। जन्माक्षर तो क्वचित् ही लोगों के होते हैं और फिर दहेज प्रथा के दारुण भय से संत्रस्त मध्यमवर्गीय एवं धनी परिवार भी येन-केन-प्रकारेण कन्या परिणय पर उतारु होते हैं।

विवाह के कुछ काल पश्चात् मानसिक तनाव, तलाक, गृह कलह, आत्मदाह, सन्तान का न होना और कई तरह से दाम्पत्य जीवन में बाधक घटनाएं जब बढ़ती हैं तो विचार होता है कि हमारे ऋषियों ने इसके बारे में पहले ही सोचकर निदान किया था। आइये अब हम मंगलीक दोष के कारण और निवारण पर विस्तार से विचार करें।

मंगलीक कुण्डली किसे कहते हैं। चुनरी मंगल और मौलियां मंगल क्या होता है?

सर्वार्थ चिन्तामणि, चमत्कार चिन्तामणि, देवकेरलम्, अगस्त्य संहिता, भावदीपिका जैसे अनेक ज्योतिष ग्रन्थों में मंगल के बारे में एक प्रशस्त श्लोक मिलता है-

लग्ने व्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे।
भार्याभर्तृविनाशाय, भर्तुश्च स्त्रीविनाशनम्॥

अर्थात् जन्म कुण्डली के लग्न स्थान से 1/4/7/8/12वें स्थान में मंगल हो तो ऐसी कुण्डली मंगलीक कहलाती है। पुरुष जातक की कुण्डली में यह स्थिति हो तो वह कुण्डली 'मौलिया मंगल' वाली कुण्डली कहलाती है तथा स्त्री जातक की कुण्डली में उपरोक्त ग्रह-स्थिति को 'चुनरी मंगल' वाली कुण्डली कहते हैं। इस श्लोक के अनुसार जिस पुरुष की कुण्डली में 'मौलिया मंगल' हो उसे 'चुनरी मंगल' वाली स्त्री के साथ विवाह करना चाहिए अन्यथा पति या पत्नी दोनों में से एक की मृत्यु हो जाती है। यह श्लोक कुछ अतिश्योक्तिपूर्ण लगता है परन्तु कई बार इसकी अकाट्य सत्यता नव दम्पत्ति के वैवाहिक जीवन पर अमिट बदनुमा दाग लगाकर छोड़ जाती है। उस समय हमारे पास पश्चाताप के सिवा हमारे पास कुछ नहीं रहता। ज्योतिष सूचनाओं व सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसका सही समय पर जो उपयोग कर लेता है वह धन्य हो जाता है और सोचता है वह सोचता ही रह जाता है, उस समय सिवाय पछतावे के कुछ शेष नहीं रहता।

क्या चन्द्रमा से भी मंगल देखना चाहिए?

बहुत जगह यह प्रश्न (विवाद) उठ खड़ा होता है कि क्या लग्न कुण्डली की तरह 'चन्द्र कुण्डली' से भी मंगल का विचार करना चाहिए। क्योंकि उपरोक्त प्रसिद्ध श्लोक में लग्ने शब्द दिया हुआ है यहां चन्द्रमा का उल्लेख नहीं है। इस शंका के समाधान हेतु हमें परवर्ती दो सूत्र मिलते हैं।

लग्नेन्दुभ्यां विचारणीयम्।

अर्थात् जन्म लग्न से एवं जन्म के चन्द्रमा दोनों से मंगल की स्थिति पर विचार करना चाहिए और भी कहा है-यदि जन्म चक्र एवं जन्म समय का ज्ञान न भी हो तो नाम राशि से जन्म तारीख के ग्रहों को स्थापित करके अर्थात् चन्द्र कुण्डली बनाकर मंगल की स्थिति पर विचार किया जा सकता है। इस बारे में स्पष्ट वचन मिलता है।

अज्ञातजन्मनां नृणां, नामभे परिकल्पना।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं, राशिकूटादि जन्मवत्॥

परन्तु यदि एक जातक का जन्म चक्र मौजूद हो और दूसरे का न हो तो दोनों की परिकल्पना भी नाम राशि से ही करनी चाहिए। एक का जन्म से, दूसरे का नाम से मिलान नहीं करना चाहिए। **जन्मभं जन्मधिषण्येन, नामधिषण्येन नामभम्, व्यत्ययेन यदायोज्यं, दम्पत्योनिर्धनं ध्रुवम्।** अतः आज के युग में तात्कालिक समय में भी मंगलीक दोष की गणना संभव है अस्तु।

भौम पंचक दोष किसे कहते हैं? क्या शनि, राहु व अन्य क्रूर ग्रहों के कारण कुण्डली मंगलीक कहलाती है?

चन्द्राद् व्ययाष्टमे मदसुखे राहुः कुजार्की तथा।
कन्याचेद् वरनाशकृत वरवधूहानिः ध्रुवं जायते॥

मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य ये पांच क्रूर होते हैं अतः उपरोक्त स्थानों में इनकी स्थिति व सप्तमेश की 6/8/12 वें घर में स्थिति भी मंगलीक दोष को उत्पन्न करती है। यह **भौम पंचक दोष** कहलाता है।

द्वितीय भाव भी उपरोक्त ग्रहों से दूषित हो तो भी उसके दोष शमनादि पर विचार अभीष्ट है।

विवाहार्थ द्रष्टव्य भावों में दूसरा, 12वां भाव का विशेष स्थान है। दूसरा कुटुम्ब वृद्धि से सम्बन्धित है, 12वां भाव शय्या सुख से। चतुर्थ भाव में मंगल, घर का सुख नष्ट करता है। सप्तम भाव जीवनसाथी का स्थान है, वहां पत्नी व पति

के सुख को नष्ट करता है। लग्न भाव शारीरिक सुख है अतः अस्वस्थता भी दाम्पत्य सुख में बाधक है। अष्टम भाव गुदा व लिंग योनि का है अतः वहां रोगोत्पति की संभावना है।

1. लग्न में मंगल अपनी दृष्टि से 1,4,7,8 भावों को प्रभावित करेगा। यदि दुष्ट है तो शरीर व गुप्तांग को बिगाड़ेगा। रति सुख में कमी करेगा। दाम्पत्य सुख बिगाड़ेगा।
2. इसी तरह सप्तमस्थ मंगल, पति, पिता, शरीर और कुटुम्ब सौख्य को प्रभावित करेगा। सप्तम में मंगल पत्नी के सुख को नष्ट करता है जब गृहणी (घर वाली) ही न रहे तो घर कैसा?
3. चतुर्थस्थ मंगल-सौख्य पति, पिता और लाभ को प्रभावित करेगा। चतुर्थ में मंगल घर का सुख नष्ट करता है।
4. लिंगमूल से गुदावधि अष्टम भाव होता है। अष्टमस्थ मंगल-इन्द्रिय सुख, लाभ, आयु को व भाई बहनों को गलत ढ़ंग से प्रभावित करेगा।
5. द्वादश भाव शयन सुख कहलाता है। शय्या का परमसुख कान्ता हैं। बारहवें मंगल शयन सुख की हानि करता है। धनस्थ मंगल-कुटुम्ब संतान, इन्द्रिय सुख, आवक व भाग्य को, एकमत से पिता को प्रभावित करेगा।

अतः इन स्थानों में मंगल की एवं अन्य क्रूर ग्रहों की स्थिति नेष्ट मानी गई है। खासकर अष्टमस्थग्रहों नूनं न स्त्रियां शोभना मतः (स्त्री जातक) अतः अष्टम और सप्तमस्थ मंगल का दोष तो बहुत प्रभावी है।

स्त्रियों की कामवासना का मंगल से विशेष संबंध है। यह रज है। मासिक धर्म की गड़बड़ियां प्रायः इसी से दूषित होती है। पुरुष की कामवासना का संबंध शुक्र (वीर्य) से है। मंगल रक्तवर्णीय है और शुक्र श्वेतवर्णीय है। इन दोनों के शुभ होने व समागम से ही संतान पुष्ट और वीर्यवान् होती है। अगर कुण्डली में किसी भी दृष्टि से मंगल व शुक्र का संबंध न हो तो संतानोत्पति दुष्कर है। विवाह का एक मुख्य लक्ष्य संतानोत्पति भी है। (ऋतु बराबर मंगल, रेतस् बराबर शुक्र) संतान के बिना स्त्री-पुरुष दोनों ही अपूर्ण व अधूरे रहते हैं।

ऋतु रेतो न पश्येत, रेतं न ऋतु स्तथा।
अप्रसूतो भवेज्जातः परिणीता बहुस्त्रियां॥

मंगल मकर में उच्च का होता है और शुक्र मीन में। संस्कृत में कामदेव का मकरध्वज नाम से संबोधित किया जाता है, और उसको मीन केतु भी कहा है जिसकी ध्वजा में मीन है। मीन व मकर दोनों जल के प्राणी हैं। कामदेव को भी जल तत्त्व प्रधान माना गया है। बसन्त पंचमी को प्रायः शुक्र जब अपनी मीन राशि

में आता है तब इसका जन्म माना जाता है। फूलों में पराग का जन्म ही रजोदर्शन है। रजोदर्शन ही बसंत है जो कि जवानी का प्रतीक माना गया है। कामदेव के पांच बाण हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध। इन सबमें उस समय कन्या के कौमार्य की छटा निखरकर, बासन्ती बन जाती है जब कामोपभोग योग्य बनती है। मंगल रक्त विकास और रक्त की वृद्धि दोनों में सहायक है जैसी इसकी स्थिति हो। सप्तम भवनपति के कारण पत्नी, कामदेव व रतिक्रीड़ा आदि का विचार अत्यन्त होता है।

क्या द्वितीयस्थ मंगल को भी मंगल दोष में माना जाएगा?

जन्म कुण्डली में द्वितीय भाव दक्षिण नेत्र, धन, वाणी, वाक् चातुर्य एवं मारक स्थान का माना गया है। द्वितीय भावस्थ मंगल वाणी में दोष, कुटुम्ब में कलह कराता है। द्वितीय भाव में स्थिति मंगल की पूर्ण दृष्टि पंचम, अष्टम एवं नवम में भाव पर होती है। फलत: ऐसा मंगल सन्तति, स्वास्थ्य (आयु) एवं भाग्य में रुकावट डालता है। कहा भी है।

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुम्बे,
धने वा कुजे तस्य लब्धे धने किम्।
यथा त्रोटयेत् मर्कटः कण्ठहार
पुनः सम्मुखं को भवेद्दादभग्नः॥

द्वितीय भाव में मंगल वाला कुटुम्बी क्या काम का? क्योंकि उसके पास धन-वैभव होते हुए भी वह (जातक) अपने स्वयं का या कुटुम्ब का भला ठीक उसी तरह से नहीं कर सकता, जिस तरह से बन्दर अपने गले में पड़ी हुई बहुमूल्य मणियों के हार का सुख व उपयोग नहीं पहचान पाता? बन्दर तो उस मणिमाला को साधारण-सूत्र समझकर तोड़कर फेंक देगा। किसी को देगा भी नहीं। द्वितीय मंगल वाला व्यक्ति ठीक इसी प्रकार से प्रारब्ध से प्राप्त धन को नष्ट कर देता है तथा कुटुम्बीजनों से व्यर्थ का झगड़ा करता रहता है। द्वितीय भावस्थ मंगल जीवन साथी के स्वास्थ्य को अव्यवस्थित करता है तथा परिजनों में विवाद उत्पन्न करता है। अत: द्वितीयस्थ मंगल वाले व्यक्ति से सावधानी अनिवार्य है। परन्तु मंगल दोष मेलापक में द्वितीयस्थ मंगल को स्थान नहीं दिया गया है, यह बात प्रबुद्ध पाठकों को भली-भांति जान लेनी चाहिए।

डबल व त्रिबल मंगली दोष क्या होता है? कैसे होता है?

प्राय: ज्योतिषी लोग कहते हैं कि यह कुण्डली तो डबल मंगलीक, त्रिबल मंगलीक है। मंगल डबल कैसे हो जाता है? यह कौन सी विधि (गणित) है? इसका समाधान इस प्रकार है।

1. जब किसी कुण्डली के 1/4/7/8 या 12वें भाव में मंगल हो तो वह कुण्डली मंगलीक कहलाती है। इसे हम (सिंगल) मंगलीक कह सकते हैं।
2. इन्हीं भावों में यदि मंगल अपनी नीच राशि में होकर बैठा हो तो मंगल द्विगुणित प्रभाव डालेगा तो ऐसे में वह कुण्डली डबल (द्विगुणित) मंगलीक कहलाएगी।
3. अथवा 1/4/7/8/12वें भावों में शनि, राहु, केतु या सूर्य इनमें से कोई ग्रह हो तथा मंगल हो तो ऐसे में भी यह कुण्डली डबल (द्विगुणित) मंगलीक कहलाएगी।
4. मंगल नीच का 1/4/7/8/12 भावों में हो, साथ में यदि राहु, शनि, केतु या सूर्य हो तो ऐसे में यह कुण्डली त्रिबल (ट्रिबल) मंगलीक कहलाएगी क्योंकि मंगल दोष इस कुण्डली में तीन गुणा बढ़ जाता है।
5. इस प्रकार से एक कुण्डली अधिकतम पंचगुणित मंगल दोष वाली हो सकती है। तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं करना चाहिए। अब कुछ उदाहरण देंखे।

त्रिबल मंगलीक (वैधव्य योग)

प्रस्तुत कुण्डली मध्यम परिवार में जन्मी एक महिला की है। सूर्य, मंगल चतुर्थ में एवं केतु बारहवें भाव में होने से यह कुण्डली त्रिबल मंगल वाली है।

श्रीमती गायत्री देवी
जन्म-6.3.1941, समय 12.30 रात्रि
स्थान-जोधपुर (राज.)

विवाह काल में मिलान की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया फलत: जातक का दाम्पत्य जीवन घोर कलहपूर्ण रहा। सन् 1971 चन्द्रमा की दशा में, ठीक तीस वर्ष की आयु में ही इसके पति गुजर गए और यह महिला वैधव्य जीवन भोग रही है। त्रिबल मंगलीक होने के कारण पुत्र वधू की अकाल मृत्यु हो गई।

डबल मंगलीक (वैधव्य योग)

यह कुण्डली श्रीमती इन्दिरा गांधी के पुत्रवधू की है। मंगल चौथे स्थान में द्वितीय भाव में सूर्य एवं शनि होने से यह डबल मंगलीक कुण्डली है। राहु की महादशा में ठीक 29 की आयु 22.6.80 को इनके पति की मृत्यु एक हवाई दुर्घटना में हुई।

श्रीमती मेनका गांधी जन्म-26.8.1950, समय 4.10 प्रातः, स्थान-दिल्ली

कुग्रहों का प्रभाव छोटा-बड़ा, गरीब-अमीर सभी लोगों पर बराबर पड़ता है इसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

त्रिबल मंगलीक (तलाक योग)

श्रीमती डॉ. कुसुम मंगल

प्रस्तुत कुण्डली एक सम्भ्रान्त विदुषी महिला की है। मंगल नीच राशि का द्वादश स्थान में होने से डबल तथा राहु सप्तम में होने से त्रिबल सूर्य, लग्न में होने से चौबल, (चतुगुर्णित) मंगलीक कुण्डली है। पहला प्रभाव विलम्ब विवाह 32 वर्ष की आयु 14.4.1983 को हुआ। पति पढ़ा-लिखा डॉक्टर होने के बावजूद, दाम्पत्य कलह के कारण 21.7.1992 को दोनों का आपस में तलाक हो गया।

त्रिबल मंगलीक (कलहपूर्ण दाम्पत्य जीवन)

श्रीमती दाऊलाल गुप्ता
जन्म-24.8.1934,
समय-प्रातः 6.30
स्थान-जोधपुर (राज.)

प्रस्तुत जन्म कुण्डली साधारण परिवार में जन्मे संघर्षशील व्यक्ति की कुण्डली। विवाह जीवन के 40 बसन्त बीत जाने के बाद हुआ। सप्तम में शनि एवं द्वादश में नीच का मंगल, लग्न में सूर्य त्रिबल मंगलीक होने के कारण पत्नी लड़ाकू मिली। शनि जिद्दी ग्रह है, मंगल भी सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। फलतःपत्नी जिद्दी एवं एक नम्बर की लड़ाकू, पति पर हाथ उठाने वाली मिली। 1975 में शादी हुई। 1977 में कोर्ट-केस बना। जातक को पांच माह जेल में रहना पड़ा। पत्नी अलग रहती है। तलाक नहीं हुई पर फिर भी लड़ने-झगड़ने की आदत रही। इस कुण्डली वाले जातक के अभी तक कोई संतान नहीं है।

मंगलीक दोष निवारण के कुछ बहुमूल्य सूत्र

उपरोक्त सभी सूत्रों को जब हम प्रत्येक कुण्डली पर घटित करेंगे तो 80 प्रतिशत जन्म कुण्डलीयां मंगल दोष वाली ही दिखलाई पड़ेंगी। इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि परवर्ती कारिकाओं में मंगल दोष परिहार के इतने प्रमाण मिलते हैं कि इनमें से आधी से ऊपर कुण्डलीयां तो स्वतः ही परिहार वचनों से मंगल होते हुए भी मंगल दोष-रहित हो जाती हैं अर्थात् यदि पुरुष की कुण्डली में 1,4,7,8,12 भावों में शनि, राहु या सूर्य हो तो मंगल का मिलान हो जाता है। इसमें कुछ भी परेशानी नहीं है। सारी समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाती है। उनमें से कुछ सूत्र इस प्रकार हैं-

अजे लग्ने, व्यये चापे, पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये, घटे रन्ध्रे, भौमदोषो न विद्यते।।1।।

मेष का मंगल लग्न में, धनु का द्वादश भाव में, वृश्चिक का चौथे भाव में, वृषभ का सप्तम में, कुम्भ का आठवें भाव में हो तो भौम दोष नहीं रहता।।1।।

नीचस्थो रिपुराशिस्थः खेटो भावविनाशकः।
मूलस्वतुंगामित्रस्था भाववृद्धि करोत्यलम्।।

-जातक पारिजात

अतः स्व (1,8) मूल त्रिकोण, उच्च (10) मित्रस्थ (5,9,12) राशि अर्थात् सूर्य, गुरु और चन्द्रक्षेत्री हो तो भौम का दोष नहीं रहता ।।2।।

अर्केन्दुक्षेत्रजातानां, कुजदोषो न विद्यते।
स्वोच्चमित्रभजातानां तद् दोषो न भवेत् किल।।3।।

सिंह लग्न और कर्क लग्न में भी लग्नस्थ मंगल का दोष नहीं है।।3।।

शनिः भौमोऽथवा कश्चित्, पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव, भौमदोषविनाशकृत्।।4।।

शनि, मंगल अथवा कोई भी पाप ग्रह राहु, सूर्य, केतु अगर 1,4,7,8,12वें भवन में कन्या जातक के हों और उन्हीं भावों में वर के भी हों तो भौम दोष नष्ट होता है। मंगल के स्थान पर दूसरी कुण्डली में शनि या पांच ग्रहों में से एक भी हो, तो उस दोष को काटता है।।4।।

यामित्रे च यदा सौरिःलग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।5।।

शनि यदि 1, 4, 7, 9, 12वें भाव में एक की कुण्डली में हो और दूसरे की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में से एक किसी स्थान में मंगल हो तो भौम दोष नष्ट हो जाता है।।5।।

केन्द्रे कोणे शुभोदये च, त्रिषडायेऽपि असद् ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न, मदने मदपस्तथा॥6॥

3, 6, 11वें भावों में अशुभ ग्रह हों और केन्द्र 1, 4, 7, 10 व कोण 9, 5 में शुभ ग्रह हो तथा सप्तमेश सातवें हो तो मंगल का दोष नहीं रहता॥6॥

सबले गुरौ भृगौ वा लग्नेऽपिवा अथवा भौमे।
वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः॥7॥

गुरु व शनि बलवान हो, फिर भले ही 1,4,7,10 व कोण 9,5 में शुभ ग्रह हो तथा सप्तमेश सातवें हो तो मंगल का दोष नहीं होता॥7॥

वाचस्पतौ नवमपंचकेन्द्रसंस्थे,
जातांगना भवति पूर्णविभूतियुक्ता।
साध्वी, सुपुत्रजननी सुखिनी गुणढ्याः,
सप्ताष्टके यदि भवेदशुभ ग्रहोऽपि॥8॥

कन्या की कुण्डली में गुरु यदि 1, 4, 5, 7, 9, 10 भावों में मंगल हो, चाहे वक्री हो, चाहे नीच हो या सूर्य की राशि में स्थित हो, मंगलीक दोष नहीं लगता, अपितु उसके सुख-सौभाग्य को बढ़ाने वाला होता है॥8॥

त्रिषट् एकादशे राहुः, त्रिषडेकादशे शनिः।
त्रिषडकादेश भौमः सर्वदोषविनाशकृत्॥9॥

3, 6, 11वें भावों में राहु, मंगल या शनि में से कोई ग्रह दूसरी कुण्डली में हो तो भौम दोष नष्ट हो जाता है॥9॥

चन्द्र, गुरु या बुध से मंगल युति कर रहा हो तो भौम दोष नहीं रहता परन्तु इसमें चन्द्र व शुक्र का बल जरूर देखना चाहिए॥10॥

द्वितीय भौमदोषस्तु कन्यामिथुनयोर्विना॥11॥

द्वितीय भाव में बुध राशि (मिथुन व कन्या) का मंगल दोषकृत नहीं है। ऐसा वृषभ व सिंह लग्न में ही संभव है॥11॥

चतुर्थे कुजदोषः स्याद्, तुलावृषभयोर्विना॥12॥

चतुर्थ भाव में शुक्र राशि (वृषभ-तुला) का मंगल दोषकृत नहीं है। ऐसा कर्क और कुंभ लग्न में होगा॥12॥

अष्टमो भौमदोषस्तु धनुमीनद्वयोर्विना॥13॥

अष्टम भाव में गुरु राशि (धनु-मीन) का मंगल दोषकृत नहीं है। ऐसा वृष लग्न और सिंह लग्न में होगा॥13।

व्यये तु कुजदोषः स्याद्, कन्यामिथुनयोर्विना॥14॥

बारहवें भाव में मंगल का दोष बुध, राशि (मिथुन, कन्या) में नहीं होगा। ऐसा कर्क लग्न और तुला लग्नों में होगा।।14।।

1, 4, 7, 8, 12 भावों में मंगल यदि चर राशि मेष, कर्क, मकर का हो तो कुछ दोष नहीं होता।15।

दंपत्योर्जन्मकाले, व्यय, धन हिबुके, सप्तमे लग्नरन्ध्रे,
लग्नाच्चंद्राच्च शुक्रादपि भवति यदा भूमिपुत्रो द्वयोर्वै।
दम्पत्योः पुत्रप्राप्तिर्भवति धनपतिर्दम्पति दीर्घकालम्,
जीवेतामत्रयोगे न भवति मूर्तिरिति प्राहुरत्रादिमुख्याः।।16।।

दम्पत्ति के 1,4,7,8,12वें स्थानों में मंगल जन्म से व शुक्र लग्न से हो दोनों के ऐसा होने पर वे दीर्घकाल तक जीवित रहकर पुत्र धनादि को प्राप्त करते हैं।।16।।

भौमेन सदृशो भौमः पापो वा तादृशो भवेत्।
विवाहः शुभदः प्रोक्ततिश्चरायुः पुत्रपौत्रदः।।17।।

मंगल के जैसा ही मंगल व वैसा ही पाप ग्रह (सूर्य, शनि, राहु) के दूसरी कुण्डली में हो तो विवाह करना शुभ है।17।

कुजोजीवसमायुक्तो, युक्तौ वा कुजचन्द्रमा।
चन्द्रे केन्द्रगते वापि, तस्य दोषो न मंगली।।18।।

गुरु और मंगल की युति हो या मंगल चन्द्र की युति हो या चन्द्र केन्द्रगत हो तो मंगलीक दोष नहीं होता।।18।।

न मंगली यस्य भृगुद्वितीये, न मंगली पश्यन्ति च जीवः।।19।।

शुक्र दूसरे घर में हो, या गुरु की दृष्टि मंगल पर हो गुरु मंगल के साथ हो, या मंगल राहु से युति हो या केन्द्रगत हो तो मंगली दोष नहीं होता।।19।।

सप्तमस्थो यदा भौमो, गुरुणा च निरीक्षितः।
तदातु सर्वसौख्यम् च, मंगलीदोषनाशकृत्।।20।।

सातवें भवन में यदि गुरु से देखा जाए तो मंगलीक दोष नष्ट करके सर्व सुख देता है।।20।।

केतु का फल मंगलवत् होता है अतः अश्विनी, मघा मूल नक्षत्रों में मंगल हो तो भी मंगलीक दोष नहीं रहता है।

मिलान के सर्वशुद्ध नियम

1. कुण्डली मिलान की सही विधि बहुत कम लोगों को मालूम होता है। मिलान करते समय कभी भी जल्दबाजी से काम न लें, यह दो प्राणियों के

जीवन-मरण का प्रश्न है। मंगलीक कुण्डली का परस्पर मिलान करते वक्त ज्योतिर्विज्ञों को उपरोक्त श्लोकों का सार ध्यान में लाना चाहिए। परस्पर दोनों कुण्डलियों में उपरोक्त स्थितियों का मिलान हो तो ग्रह एक दूसरे से उत्पन्न दोषों को काट देते हैं। परन्तु मात्र शनि व मंगल से बनने वाले दोष प्रभावी रहते हैं। मिलान में भावों के चक्कर में आकर कभी भी अगर दोनों कुण्डलियों में सातवें में मंगल स्थित हो तो मिलान शुद्ध न माने, ऐसी अवस्था में दोनों के गुप्तांग दूषित हो तो जीवन कष्टपूर्ण रहेगा।

2. यदि एक के मंगल 7वें में हो दूसरे के 8वें में हों तो भी मिलान न करें।
3. समान भाव में मंगल की स्थिति दोनों के जीवन में दोष वृद्धि करेगी।
4. सप्तमेश एवं शुक्र पर तथा सप्तमेश व गुरु पर पड़ने वाले कुप्रभाव हों तो भी मिलान न मानें इससे तलाक कलह प्रभावित रहेंगे।
5. शेष स्थितियों में मिलान श्रेयस्कर होगा।
6. मंगल व सप्तमेश किन नक्षत्रों की दशा में स्थित है उनका भी मिलान के वक्त ज्ञान कर लेना सूक्ष्मतः प्रभावी होगा। यदि कारक व शुभ ग्रह नक्षत्रों में स्थिति होगी तो मिलान सुन्दर अन्यथा मध्यम व अन्य योगों में कनिष्ठ रहेगा। अतः कुण्डली का मिलान करने वालों को ऐसे स्थाई मामलों में सुयोग्य ज्योतिषी की सलाह ही लेनी चाहिए व भावी जीवन में दम्पति का जीवन सुखमय हो यह परोपकार लक्ष्य में रख लेना चाहिए।
7. उचित तांत्रिक मांत्रिक प्रयोगों से उसका पालन भी यदि अभीष्ट हो तो स्पष्ट बता देना चाहिए। विवाह की स्थिति में तो हम विचार कर ही लेते हैं कि-

   वरस्य भास्करबलं, कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
   द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं, विवाहो नान्यथा भवेत्।।

   अतः मंगलीक कन्या की गुरु की स्थिति मिलान के बाद भी निर्बल लगे तो उसे विवाह से पूर्व पुखराज रत्न सवा पांच रत्ती के वजन में धारण करा देना चाहिए। चाहे जिस लग्न की कुण्डली हो या न हो पुखराज रत्न को धारण करना हर युवती के लिए शुभ माना गया है। हां अगर वह स्वयं आत्मनिर्भर और; नौकरी करती हो तो कुण्डली की ग्रह स्थिति देखकर के रत्न पहनावें और उसमें भाग्येश व लग्नेश में से जो भी शुभ हो उसका योग करावें।
8. पुरुष की शुक्र की स्थिति स्पष्ट देखकर उसका पालन करने से मंगल के मिलान के बाद भी दम्पत्ति सुख पाएंगे, अन्यथा नहीं।
9. मंगल का मिलान स्पष्ट सुनिश्चित होने के बाद हमें अष्टकूट मिलान की ओर आगे बढ़ना चाहिए। आजकल पंचाग में बनी अष्टकूट टेबल को देखकर

फटाफट गुण बता दिए जाते हैं। वे निर्णय भी गलत होते हैं क्योंकि वे एकांकी होते हैं। अष्टकूट मिलान हेतु 1. वर्ण, 2. वैश्य, 3. तारा, 4. योनि, 5. ग्रहमंत्री, 6. गणमैत्री, 7. भकूट, 8. नाड़ी। सभी का अलग-अलग मिलान करना चाहिए।

10. यदि कुण्डली मिलान को सौ में से नम्बर दिए जाए तो पचास नम्बर मंगल को मिलेंगे। मंगल के मिलान होते ही कुण्डली 50 प्रतिशत मिल जाती है। बाकी अष्टकूट से प्राप्त होने वाले नम्बर भी जोड़ दें। मानों किसी जातक को अष्टकूट से 18 नम्बर मिले। मंगल मिल गयातो 50+18 = कुल मिलान 68 उत्कृष्टता को धारण किए हुए है। ऐसा स्पष्ट जानना चाहिए।

11. अष्टकूट मिलान आजकल कम्प्यूटर से होता है। वह उत्तम है। उसमें गलती बिल्कुल नहीं होती। परन्तु अंतिम निर्णय तो विद्वान् ज्योतिषाचार्य को ही करना होता है, वहीं श्रेष्ठ है क्योंकि कम्प्यूटर लगा है। रोज के पचासों मिलान होते हैं पर अंतिम रूप से सारांशत हम स्वयं व्यक्तिगत रुचि लेकर जो निर्णय देंगे, वहीं सही होगा। कम्प्यूटर मानव कार्यों का सर्वोतम सहायक है, पर सब कुछ नहीं।

मंगल दोष निवृत्ति के विविध उपाय

मानव जीवन बड़ी विषमताओं से भरा है। कई बार ऐसा होता है कि लड़का पसन्द है, लड़की मंगलीक है, पर मंगल का मिलान नहीं हो रहा है। अथवा लड़का-लड़की दोनों एक दूसरे को पसन्द कर लिया, मंगल मिलान एवं कुण्डलियों में उनका विश्वास नहीं है, ऐसे में माता-पिता, अभिभावक किसी अशुभ की आशंका से चिन्ताग्रस्त हो उठते हैं।

दक्षिण भारत में केले के तने के साथ विवाह करके उसे समुद्र में बहा देते इसकी पूरी विधि के लिए हमारे द्वारा लिखित **कालसर्प योग शांति एवं घट विवाह पर शोध कार्य** नामक पुस्तक अवश्य पढ़ें।

1. वर-कन्या दोनों मूंगा रत्नजड़ित मंगल-यंत्र धारण करें। यह यंत्र विवाह के पूर्व धारण करेंगे तो ससुराल अच्छा व शीघ्र मिलेगा। विवाह के बाद पहनने से दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा। हमारा अनुभव है कि मूंगे की अंगूठी की जगह मंगल-यंत्र ही पहनना ज्यादा श्रेष्ठ रहता है। एक तो यह नाभि से ऊपर रहने के कारण पवित्र रहता है। दूसरा इसमें यंत्र-मंत्र-तंत्र तीनों की शक्ति (त्रिगुणित) ताकत होती है।

2. कन्या मंगला गौरी का व्रत उद्यापन करे अथवा

3. वट सावित्री का व्रत करे।
4. मंगल ग्रह के दस हजार जप एवं उसकी हवनात्मक शान्ति करें, ग्रह-शान्ति का प्रयोग करावें।
5. पार्वती मंगल स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
6. गलती से विवाह हो जाए एवं बाद में ग्रह उसकी स्थितियों का पता चल जाए तो घर में नित्य सुन्दरकाण्ड का पाठ करना चाहिए।
7. डबल-त्रिबल मंगलीक कुण्डली वाले विवाह के पूर्व दुर्गासप्तशती के अर्गला स्तोत्र का नित्य पाठ करें तथा श्लोक 24 को तीन बार नित्य दोहराएं।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

यदि स्त्री जातक पाठ करे तो पत्नी की जगह पति पढ़े।

8. अनेक शाबर मंत्र भी विलक्षण रूप से काम करते हैं। ऐसे अन्य अनुभूत शाबर मंत्रों का प्रयोग गुरु मुख से ग्रहण करके गुरु की आज्ञा से करना चाहिए।

सप्तम भावजनित कष्ट निवारण के विविध उपाय

1. सवा पांच रत्ती मूंगे की अंगूठी धारण करें।
2. ताम्बे के प्राणप्रतिष्ठित मंगल-यंत्र का नित्य पूजन करें।
3. मूंगा युक्त 'मंगल-यंत्र' गले में धारण करें।
4. मंगलवार के 28 व्रत रखें।
5. पुखराज युक्त 'गुरु-यंत्र' गले में धारण करें।
6. गुरुवार का व्रत रखे एवं गुरुवर की कथा करें।
7. घट-विवाह शास्त्रोक्त विधि से करावें।
8. वट सावित्री का व्रत एवं उद्यापन करें।
9. मंगला गौरी का व्रत कथा करें।
10. शुक्रवार का नियमित व्रत रखें, खटाई का सेवन न करें।
11. शुक्र यंत्र गले में धारण करें।
12. पार्वती मंगल स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
13. गुरु की आज्ञा लेकर कोई तान्त्रिक अनुष्ठान करें।
14. मनोवांछित पति प्राप्ति हेतु गुरु की आज्ञा से तान्त्रिक वंशीकरण मंत्रों का प्रयोग करें।

15. मनोवांछित भार्या की प्राप्ति हेतु दुर्गा सप्तशती के मंत्र का प्रयोग गुरु आज्ञा से करें।
16. शीघ्र विवाह हेतु गन्धर्वराज के मंत्र का अनुष्ठान करें।
17. गृहकलह की शांति हेतु सुन्दरकाण्ड का नित्य पाठ करें।
18. शीघ्र विवाह हेतु आकर्षक मंत्र एवं यंत्र का प्रयोग करें।
19. सुखद वैवाहिक जीवन के लिए विवाह समय दो बराबर वजन के चांदी के टुकड़े केसरयुक्त चावल के साथ लें। फिर सुखी गृहस्थ का संकल्प लेकर चावल की एक ढेरी अपने पास रखें। जब तक अवशेष भाग लड़की या लड़के के पास रहेगा। उनका गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहेगा।
20. सोमवार का नियमित व्रत कथापूर्वक करें। शिवजी पर दुग्धमिश्रित जल चढ़ावें।
21. माणिक्यजड़ित सूर्य यंत्र धारण करें।

एक कुण्डली मंगलीक है, दूसरी कुण्डली मंगलीक नहीं है तो क्या करें?

यह भी बड़ी भारी समस्या है कि लड़का-लड़की दोनों में एक ही कुण्डली मंगलीक है दूसरी कुण्डली मंगलीक नहीं है पर दोनों शादी करना चाहते हैं। गुण मिल रहे है। ऐसे में क्या करें?

अथवा विवाह हो गया और बाद में पता चला कि एक की कुण्डली मंगलीक है, एक की नहीं तो क्या उपाय करें? वैवाहिक जीवन में नित्य-कलह हो रही है। दोनों जीवन साथी में से एक बीमार रहता है तो क्या करें?

उपरोक्त तीनों समस्या का निदान है। घट विवाह और कुम्भविवाह से बढ़िया कोई परिहार नहीं है क्योंकि कन्या की स्थिति घट को विष्णु भगवान का रूप दिया जाता है। जिस कन्या का भगवान के साथ विवाह हो जाता है वह अखंड सौभाग्य की स्वामिनी होती है। उसे पति की मृत्यु, बीमारी का भय नहीं रहता तथा कुण्डलीगत दुर्योग भी इस टोटके से नष्ट हो जाते हैं। अविवाह-विलम्ब विवाह की स्थिति भी समाप्त हो जाती है।

पुरुष यदि घट विवाह करता है तो उसका तांत्रिक विवाह लक्ष्मी से कराया जाता है। लक्ष्मी अखंड सौभाग्य की स्वामिनी होती है। ऐसे में उसकी पत्नी की बीमारी नष्ट हो जाती है। इस टोटके के बाद उसकी पत्नी को अकालमृत्यु का भय नहीं रहता।

अष्टकूट

अष्टकूट कम मिलते हैं तो क्या करें?

कई बार यह भी प्रश्न, जिज्ञासा प्रबुद्ध पाठकों में आती है कि अष्टकूट गुण कम मिलते हैं तो क्या करें? अष्टकूट गुण कम मिलते हैं तथा मंगल का मिलान है तो विवाह कर सकते हैं क्योंकि मिलान में 50 नम्बर मंगल एवं 50 नम्बर अष्टकूट को दिया जाता है। मान लीजिए किसी मिलान के 14 गुण ही मिले तथा मंगल का मिलान मिल गया तो 50+14 कुल 64 नम्बर 100 में से इस मिलान को मिले। आप विवाह कर सकते हैं?

इसके विपरीत यदि किसी कुण्डली मिलान में 36 के 36 गुण मिल गए पर मंगल का मिलान नहीं हुआ, तो 100 नम्बर में से केवल 36 गुण मिलने में मिलान असफल है। विवाह नहीं कर सकते हैं पर वर-वधू दोनों विवाह करने के लिए कटिबद्ध है। दूसरा कोई विकल्प नहीं है तो विवाह करने के पहले घट-विवाह करें। इसके बाद रिस्क लेने में कोई नुकसान नहीं है।

अष्टकूट मिलान का वैज्ञानिक तरीका

भारतीय ज्योतिष शास्त्र में संभावित वर-वधू का मिलान नक्षत्र एवं उसके चरण को आधार मानकर किया जाता है। यह मानदंड जिसे **'गुण'** कहते हैं कुल 36 नंबर का होता है जो कि आठ विभिन्न मानदंडों में विभाजित होता है। इसे ज्योतिष की भाषा में अष्टकूट कहते हैं। इनके क्रम इस प्रकार है 1. वर्ण, 2. वैश्य, 3. तारा, 4. योनि, 5. गृहमंत्री, 6. गणमैत्री, 7. भकूट, 8. नाड़ी। जिस क्रम से यह मानदंड यहां दिए गए हैं, इसी क्रम से उत्तरोत्तर इनके नंबर मिलते हैं अर्थात् यदि दो व्यक्तियों के **'वर्ण'** आपस में मिल गए तो न्यूनतम नंबर एक मिलेगा और **'नाड़ी'** आपस में मिल गई तो अधिकतम नंबर 8 मिलेंगे। इस प्रकार उत्तरोत्तर वर्ण से वैश्य बलवान है, वैश्य से तारा, तारा से योनि और अंतिम रूप से **'नाड़ी'** के मिलान पर ज्यादा जोर दिया गया है।

इन 'गुणमिलानों' में सामान्यत: 13½ गुण मिलने पर संभावित वर-वधू को विवाह को इजाजत दे दी जाती है। 18 गुण का मिलान उत्तम माना जाता है, उसे 50 प्रतिशत अंक मिल जाते हैं। 36 गुणों का मिलान तो बहुत कम ही बिरले जोड़ों में पाया जाता है। हमारे जीवन काल में अब तक कुल आठ-दस की संख्या में ही ऐसी कुंडलियां आई जिनके 36 में से 36 गुण मिले। यह भी देखा कि ऐसे व्यक्तियों

का गृहस्थ जीवन अत्यधिक सुखी-सम्पन्न एवं श्रेष्ठ संतान से युक्त होकर ऐश्वर्यशाली ढंग से व्यतीत हो रहा है। इस **मेलापक** में जो गुण अवशेष रह जाते हैं। ज्योतिषशास्त्र में उनके दोष भी बतलाए गए हैं। इन दोषों पर परिहार भी **'शीघ्रबोध'** एवं अन्य महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों में दिया गया है। परंतु आजकल के ज्योतिषी इन परिहार वचनों से नितांत अनभिज्ञ हैं।

विवाह मेलापक की इन्हीं कसौटियों पर उद्योगपतियों एवं व्यापारी वर्ग अपने भागीदारों की कुंडलियों को बनवाते हैं एवं मिलवाते हैं। उनका उद्देश्य रहता है कि हमारी भागीदारी निभेगी या नहीं? निभेगी तो हमारा नया व्यापार सफल होगा या नहीं? कितने गुण मिलते हैं? कौन-सा दोष हमारे बीच में है? उसका परिहार अनिष्ट निवारण किन-किन उपायों से किया जा सकता है? क्या साथ जीवन भर निभेगा? बीच में तलाक, व्यवधान जैसी परिस्थिति तो नहीं बनेगी? इन सभी जिज्ञासा का सुंदर समाहार हमें आठ कसौटियों के माध्यम से मिल जाता है। जिसका वैज्ञानिक अध्ययन आज के युग की प्रमुख आवश्यकता है। आइए हम इन क्रमिक मानदंडों का समीचीन अध्ययन करें।

वर्ण विचार

'वर्ण' का सीधा अर्थ होता है जाति।

समस्त मानव को 1. ब्राह्मण, 2. क्षत्रिय, 3. वैश्य एवं 4. शूद्र, इन चारों वर्णों में विभाजित किया जाता है। यह चार वर्ण सत, रजस, राजस एवं तामस के प्रतीक हैं। प्राचीन ऋषि परंपरा से लेकर आज तक ब्राह्मण वेद-विद्या एवं बुद्धि का प्रतीक, क्षत्रिय शूरवीरता एवं रक्षा का, वैश्य व्यापार-व्यवसाय एवं शूद्र कृषि एवं समाज के अन्य सेवाधारी कार्यों का कर्मठ प्रतीक माना गया है। द्वादश राशियों के क्रम में-

1 मीन, वृश्चिक और कर्क ब्राह्मण राशि, (जल तत्त्व)

2. मेष, सिंह और धनु क्षत्रिय राशि (अग्नि तत्त्व)

3. वृष, कन्या और मकर वैश्य राशि (भूमि तत्त्व)

4. मिथुन, तुला और कुंभ शूद्र राशि (वायुतत्त्व) वाली राशियां कही गई हैं। अग्नि तत्त्व और जल तत्त्व की शत्रुता है जबकि अग्नि एवं वायु में मित्रता है। इसी स्वभाव को ध्यान में रखते हुए **'वर्ण व्यवस्था'** का वैज्ञानिक पहलू विवाह मेलापक का प्रथम मान बिन्दु माना गया है।

शास्त्रकारों ने कहा है-

वर्ण ज्येष्ठा तु या नारी, वर्ण हीनस्तु यः पुमान्।
विवाह यदि कुर्वीत, तस्य भर्ता विनश्यति॥

अर्थात् विवांह मेलापक में स्त्री का वर्ण उत्तम (श्रेष्ठ) होना चाहिए। वर यदि हीन वर्ण का हो तो विवाह नहीं करना चाहिए। हीन वर्ण में विवाह करने पर स्वामी (पति) का नाश होता है। स्त्री-पुरुष का एक वर्ण हो तो गुण-1, एक दूसरे के विपरीत वर्ण हो तो गुण 0 मिलता है। प्रस्तुत टेबल से आप वर्ण का सटीक मिलान कर सकते हैं।

वर्ण-गुणज्ञानचक्र

	वर				
	वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
कन्या	ब्राह्मण	1	0	0	0
	क्षत्रिय	1	1	0	0
	वैश्य	1	1	1	0
	शूद्र	1	1	1	1

वश्य विचार

समस्त संसार के चराचर जीवों, प्राणियों को पांच वश्य में विभाजित किया गया है। मेष राशि पूरी, धन राशि का उत्तरार्द्ध, मकर का पूर्वार्द्ध, वृषभ और सिंह राशि पूरी इन सभी की 'चतुष्पद' (चौपायों)की संज्ञा कही गई है।

वृश्चिक राशि की सर्प वनचर संज्ञा है। कर्क राशि की कीट संज्ञा है। धनु का पूर्वाद्ध मिथुन, कन्या और तुला ये द्विपद (मनुष्य) संज्ञक है। इसी प्रकार कुंभ, मीन और मकर राशि का उत्तराद्ध यह सभी जलचर संज्ञक है। ऐसा समझना चाहिए।

अब वश्य मिलान को ठीक तरह से समझना चाहिए। सिंह राशि को छोड़कर सभी राशियां मनुष्य के वश में है। मनुष्यों को जलचर भक्ष्य हैं तथा सर्प, बिच्छू आदि भयकारक हैं। वृश्चिक राशि को छोड़कर सभी राशियों सिंह राशि के वश में हैं। एक की द्विपद (मनुष्य) राशि दूसरे की जलचर हो तो वैर, उसी प्रकार एक की सिंह (चतुष्पद) राशि और दूसरे की द्विपद (मनुष्य) राशि हो तो भी वैर होता है। इसी प्रकार बुद्धि से निर्णय करना चाहिए।

चतुष्पपादि राशि को संज्ञाचक्र में लिखे अनुसार विचार करना, जैसे कि द्विपद राशियों की सब राशियों वश्य हैं पर सिंह (चतुष्पद) राशि इनकी प्रतिकूल है। शेष जलचर राशियां द्विपद राशियों की भक्ष्य हैं। उसी प्रकार सर्प (वनचर) राशि को द्विपद (नर) राशियों का भय रहता है। इस प्रकार विचार करके प्रबुद्ध ज्योतिषी को बुद्धिमत्ता से निर्णय लेना चाहिए। इसकी टेबल इस प्रकार है। इसके सही मिलान पर 2 गुण (नंबर) मिलते हैं।

वश्य-गुणज्ञान चक्र

	वर					
	वर्ण	चतुष्पद	नर	जलचर	वनचर	कीट
कन्या	चतुष्पद	2	1	1	1/2	2
	नर	1	2	1	0	0
	जलचर	1	1/2	2	1	2
	वनचर	1	1	1	1	0
	कीट	1	0	1	0	2

तारा विचार

तारा (Star) का सीधा संबंध वर-कन्या के जन्मकालीन नक्षत्रों से है। कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म-नक्षत्र तक गिनना। उसी प्रकार वर के जन्म-नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनना, जो संख्या आवे, उसकी [illegible] अलग-अलग भाग दें। जो शेष रहे उसे 'तारा' जानना चाहिए। जो 3-5-7 अंक रहे तो तारा अशुभ जानना बाकी शुभ जानना चाहिए। स्त्री-पुरुष दोनों की तारा शुभ+अशुभ हो तो उसका गुण 1½, दोनों की तारा शुभ हो तो उसके 3 गुण, एक की अच्छी और दूसरे की नेष्ट होने पर 1½ गुण मिलता है। दोनों की तारा अशुभ हो तो गुण 0 समझना चाहिए।

उदाहरण-चंपालाल का जन्म-नक्षत्र रेवती है तथा कन्या का नाम भावना 'मूल नक्षत्र' पर है। इनकी तारा मिलानी है। कन्या के जन्म-तिथि 'मूल नक्षत्र' से वर के जन्म नक्षत्र 'रेवती' तक गिना तो 9 की संख्या प्राप्त हुई। यहां शून्य (0) की गणना नहीं है सो 9 के 9 ही रहे। वर के जन्म नक्षत्र रेवती से कन्या के जन्म नक्षत्र 'मूल' तक गिना तो 20 आए, 20 में 9 का भाग दिया तो शेष 2 बचे। अब कन्या की तारा 9 से वर की तारा 2 वाले कोष्ठक की संधि में देखे तो 3 अंक की प्राप्ति हुई अतः दोनों का तारा मिलान श्रेष्ठतम रहा।

नोट-इस गणना में अभिजित नक्षत्र भी लिया गया है।

योनि गुण ज्ञान चक्र

	योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
कन्या	अश्व	4	2	3	2	2	2	2	3	1	1	3	2	2	1
	गज	2	4	3	2	2	2	2	2	3	2	2	3	2	0
	मेष	3	3	4	3	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
	सर्प	2	2	3	4	2	2	1	1	2	2	2	2	0	2
	श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
	मार्जार	2	2	3	2	1	4	0	2	2	1	2	2	2	2
	मूषक	2	2	2	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
	गौ	3	2	3	1	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
	महिष	1	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
	व्याघ्र	1	2	1	2	1	1	2	0	1	4	1	1	2	2
	मृग	3	2	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	2
	वानर	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
	नकुल	2	2	3	0	2	2	2	3	2	2	2	2	4	2
	सिंह	1	0	1	2	1	2	1	1	1	3	2	3	2	4

ग्रह मैत्री विचार

विवाह मेलापक, भागीदार या सेवक रखते समय ग्रह-मैत्री पर विचार, अवश्य करना चाहिए, इससे ग्रहों की नैसर्गिक शत्रुता एवं मित्रता का पता चलता है। फलित ज्योतिष में किसी भी प्रकार का फलादेश करते समय ग्रहों के इन स्वाभाविक गुणवत्ता को ध्यान में रखना चाहिए। यथा-

1. **सूर्य**-के शुक्र, चन्द्र, मंगल **मित्र** है, बुध से **समभाव** एवं शुक्र, शनि से **शत्रुता** है।
2. **चन्द्रमा**-के सूर्य, बुध **मित्र**, मंगल गुरु, शुक्र, शनि से **समभाव** परन्तु शत्रुता किसी से नहीं है।
3. **मंगल**-की सूर्य, चन्द्र शुक्र से **मित्रता** है। शुक्र, शनि से **समभाव** किंतु बुध से **शत्रुता** है।
4. **बुध**-सूर्य, चंद्र मंगल का **मित्र** है। मंगल, शुक्र, शनि से **समभाव** रखता है परन्तु चन्द्रमा से उसकी **शत्रुता** है।
5. **गुरु**-सूर्य, शुक्र का **मित्र** है। शनि से **समभाव** रखता है। किंतु बुध, शुक्र से उसकी **गुप्त शत्रुता** है।
6. **शुक्र**-बुध, शनि का **मित्र** है। मंगल, बृहस्पति से **समभाव** एवं सूर्य, चन्द्र का **शत्रु** है।
7. **शनि**-बुध, शुक्र का **मित्र**, गुरु से **समभाव** है, किन्तु सूर्य, मंगल, चन्द्र से **शत्रुभाव** रखता है।

वर कन्या दोनों के स्वामी एक हो तो मैत्री गुण =5, सम या शत्रु का गुण =0 या 1/2 जानना, शत्रु + मित्र का गुण=1, सम मित्रता=4, समतत्त्व=3, शत्रु शत्रुता का गुण=0 समझना चाहिए। शास्त्रकारों ने कहा कि यदि वर और कन्या दोनों की राशियों के स्वामी अन्योन्य (परस्पर) मित्र हों तो **श्रेष्ठ,** एक का राशि, स्वामी **सम** और दूसरे का मित्र हो तो **मध्यम,** दोनों के राशि स्वामी सम हों तो **उदासीन,** दोनों का राशि स्वामी शत्रु हो तो एक की मृत्यु, एक का राशि स्वामी शत्रु और दूसरे का सम हो तो **वियोग** होता है।

ग्रह मैत्री गुण चक्र वर

	ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
	चन्द्र	5	5	4	1	4	1/2	1/2
कन्या	मंगल	5	4	5	1/2	5	3	1/2
	बुध	4	1	1/2	5	1/2	5	4
	गुरु	5	4	5	1/2	5	1/2	3
	शुक्र	0	1/2	3	5	1/2	5	5
	शनि	0	1/2	1/2	4	3	5	5

गण विचार

दुनिया के मनुष्यों को ज्योतिष-शास्त्र द्वारा **देव, मनुष्य** एवं **राक्षस** तीन गणों में बांटा गया है।

1. अश्विनी, मृगशीर्ष, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाति ये नौ देव नक्षत्र '**देवगण**' कहलाते हैं।
2. पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपद, आर्द्रा, रोहिणी और भरणी ये नौ मनुष्य नक्षत्र '**मनुष्यगण**' कहलाते हैं।
3. कृत्तिका, मघा, अश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूल ये नौ राक्षस नक्षत्र '**राक्षसगण**' कहलाते हैं।

गुणफलम्-

स्वगणे च उत्तमा प्रीतिः मध्यमाऽमरमृत्ययोः।
मर्त्यराक्षसोमृत्युः कलहो देवराक्षसोः॥
राक्षसी यदि वा नारी, नरो भवति मानुषः।
मृत्युस्तत्र न संदेहो, विपरीतः शुभावहः॥

यदि स्त्री-पुरुष का गण एक हो तो परस्पर अत्यंत प्रीति रहेगी, देव और मनुष्यगण में **मध्यम प्रीति**, मनुष्य और राक्षस गण हो तो **मृत्यु**, देव और राक्षस गण हो तो परस्पर कलह सदैव बना रहता है। यदि कन्या का राक्षस गण हो और वर का मनुष्य गण हो तो निःसन्देह वर की मृत्यु होती है। यदि वर का राक्षस गण हो और कन्या का मनुष्य गण हो तो फल शुभ रहता है।

स्त्री–पुरुष का एक गणं हो तो गुण	= 6
पुरुष का देव गण और कन्या का मनुष्य गण हो तो	= 6
दोनों का मनुष्य राक्षस गण हो तो	= 0
दोनों राक्षस गण हो तो	= 1
दोनों देव–मनुष्य हों तो गण	= 6
इसके विपरीत गण हो तो	= 1
तथा शत्रुता ने	= 0 समझना।

स्पष्टीकरण हेतु निम्न चार्ट देखें–

उदाहरण–मान लो किसी का नाम **रमेश** स्वाति नक्षत्र देवगण में है और इसके विवाह या भागीदारी किसी **ममता** नाम की लड़की मघा नक्षत्र, राक्षसगण) से होने जा रहा है तो निश्चय समझें ये दोनों जीवन भर झगड़ते रहेंगे तथा उपर्युक्त चक्र के अनुसार ही इन्हें = 0 (शून्य) नंबर प्राप्त होंगे।

यदि आप अपना नाम देवगण में रखना चाहते हैं, तो इन अक्षरों को चुनिए–

1. चू, चे, चो, ला, 2. वे, वा, का, की 3. दे, दो, चा, ची
4. पू, ष, ण, ठ, 5. हू, हे, हो, डा 6. के, को, हा, ही,
7. ना, नी, नू, ने 8. खी, खू, खो 9. रु, रे, रो, ता।

गण मैत्री गुण ज्ञान चक्र वर

	गण	देव	भर	राक्षस
	देव	6	5	1
कन्या	नर	5	6	0
	राक्षस	1	0	6

भकूट विचार

भकूट को **'राशिकूट'** भी कहते हैं। दो राशियों की परस्पर मित्रता के आधार पर इसका मिलान किया जाता है। इसके सीधे सात नंबर मिलते हैं या=0

शास्त्रवचनानुसार कन्या तथा वर की राशि आपस में चौथी और दसवीं हो, तीसरी या ग्यारहवीं हो तो **शुभ**। दोनों की सातवीं राशि हो तो सम जानना और एक नक्षत्र हो, तब भी शुभ (कल्याणकारी) समझना चाहिए। राजस्थानी भाषा में इसे **'लेणियां-देणियां'** का मिलान भी कहते है।

भारतीय ज्योतिषियों ने राशिकूट का और भी सूक्ष्मता से अध्ययन किया और कहा कि परस्पर छठी और आठवीं राशि (षडाष्टक योग) हो तो मृत्यु होती है। नवीं

उपचार–रेवती नक्षत्र का देवता 'पूषा है। यह वृषभ दान से शांत होता है। **'वृषन्तव वघ्रेति'** मंत्र जाप से इस नक्षत्र का देवता प्रसन्न होता है। 'मधूक वृक्ष' की समिधा से हवन करना चाहिए।

मंगल का गोचर परिभ्रमण

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार गोचर का मंगल जातक के व्यक्तिगत जीवन को इस प्रकार से प्रभावित करेगा।

भीतिं क्षतिं वित्तमरि प्रवृद्धि
मर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम्।
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं
लाभ व्ययं भूतनयः करोति॥

गोचर में मंगल पहले स्थान में हो तो भय, दूसरे स्थान में हो तो चोट पहुंचने, तीसरे स्थान में धनहानि हो, चौथे स्थान में हो तो शत्रुओं का प्रकोप बढ़ेगा, पांचवे स्थान में धन नाश, छठे स्थान में हो तो धन लाभ, सातवें स्थान में धन नाश, आठवें स्थान में हो तो शास्त्र में चोट, दुर्घटना, नवें स्थान में रोग, दसवें स्थान में भी रोग, ग्यारहवें स्थान में लाभ और बारहवें स्थान में हो तो व्यय रूप फल होगा। अर्थात् खर्च की अधिकता रहेगा।

गोचर के मंगल का प्रभाव
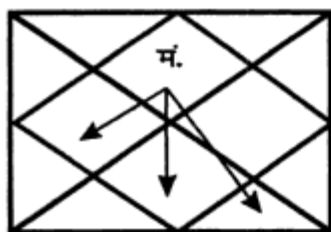
मंगल प्रथम स्थान में–गोचर का मंगल जब प्रथम स्थान में भ्रमणशील होगा तब शक्ति प्रदर्शन एवं स्पर्धा की भावना बढ़ जाएगी। इस समय व्यक्ति अपने अधिकारों के प्रति सचेष्ट रहेगा। जातक का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। इस समय जातक अपने वायदों को पूरा करेगा और उसे सर्वत्र सफलता मिलेगी। शुभ मंगल की दृष्टि भौतिक ऐश्वर्य बढ़ाएगा। भूमि लाभ होगा। मुकदमें में विजयश्री का वरण होगा। उपरोक्त फलादेश में विभिन्न लग्नों के अनुसार न्यूनाधिक वृद्धि होगी।

लग्नानुसार विभिन्न फल–यदि मेष लग्न हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति होगी। भूमि एवं वाहन का सुख मिलेगा। **वृषलग्न** में झगड़ा कराएगा। व्यर्थ की यात्राएं होगी। **मिथुनलग्न**–सामान्य एवं **कर्कलग्न**–राजसुख एवं संतान सुख की प्राप्ति होगी। **सिंहलग्न**–भाग्य में वृद्धि होगी। **कन्यालग्न**–शत्रुओं से युद्ध लाभ

भोजसंहिता (स्वानुभूति)-यदि यह युति **मेष लग्न** में हो तो जातक राजा या मिनिस्टर होता है। यहां पर **नीचभंगराजयोग** एवं **रुचकयोग, कुलदीपक योग** बनता है।

31. मंगल + शुक्र + शनि

सारावली : प्रवासी। शील रहित संतति।

जातक परिजात : प्रवासी। संतति । कुसंगति का शिकार।

मानसागरी : प्रवास प्रिय। दुखी। पत्नी शील रहित।

भोजसंहिता (स्वानुभूति)-यदि यह युति **'तुलालग्न'** में हो तो जातक राजा या मिनिस्टर होता है। यहां **मालव्ययोग** बनता है।

32. बुध + गुरु + शुक्र

ज्योतिष तत्त्व विवेक : राजसेवी, सुकीर्ति वाला, प्रसन्नमूर्ति, शत्रु को जीतने वाला सत्यवादी होता है।

भोजसंहिता-यह युति यदि **मीनलग्न** में हो तो **नीचभंग राजयोग** एवं **मालव्य योग** के कारण व्यक्ति राजा का राजमंत्री होगा।

33. बुध + गुरु + शनि

ज्योतिष तत्त्व विवेक : स्थान और धन, ऐश्वर्य आदि से युक्त, बहुभाषी, धैर्यवान व सदाचारी।

भोजसंहिता-यह युति यदि **'मकर लग्न'** में हो तो **नीचभंग राजयोग** एवं **शश योग** के कारण व्यक्ति राजा या राजमंत्री होगा।

34. बुध + शुक्र + शनि

ज्योतिषतत्त्व विवेक : साधु स्वभाव से हीन, झूठ बोलने वाला, बहुत बोलने वाला, धूर्त, गमन करने वाला, कलाओं का वेत्ता।

भोजसंहिता-यह युति यदि कन्यालग्न में या **'मीनलग्न'** में हो तो **नीचभंगराज योग** एवं **भद्रयोग'** के कारण व्यक्ति राजा या राजमंत्री होगा। यहां **कुलदीपक योग** भी बनेगा।

35. शनि + शुक्र + गुरु

ज्योतिष तत्त्व विवेक : नीचकुलोत्पन्न, सुन्दर कीर्तिमान, पृथ्वीपति, सदाचारशील।

भोजसंहिता-यह युति यदि **मकरलग्न** में हो तो **नीचभंग राजयोग** के कारण व्यक्ति राजा या राजगुरु होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

मंगलीक दोष

कारण एवं निवारण

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकांड व पौरोहित्य पर लगभग 400 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

मंगल को ग्रहों का सेनापति कहा गया है। यह पुरुषार्थ शक्ति का प्रतीक है। पुरुष का शुक्राणु एवं स्त्रियों का रज मंगल ग्रह के प्रभाव से बनता है। अतः संतान उत्पत्ति, दाम्पत्य सुख, परस्पर ग्रह-गुण-मिलाप में मंगल का प्रभाव सर्वोपरी है, अक्षुण्ण है।

मंगलीक दोष का होना सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। अतः इसके निवारण हेतु यह पुस्तक लिखी गई है, जो घटविवाह, अर्कविवाह एवं तुलसी विवाह की सम्पूर्ण विधि सहित है।

ISBN : 81-288-0993-8

9 798128 809933

Rs. 60.00

A.H.W. SAMEER SERIES

डायमंड बुक्स